❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतृभ्यो मघवन् काममा पृण।। ऋग्वेद 1/57/5
हे ऐश्वर्यशालिन्! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।
O the Bounteous Lord! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 39, अंक 29 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 मई, 2016 से रविवार 29 मई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

"भाषा एकता के आगे झुकी दिल्ली सरकार"

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अन्य भाषा-भाषी संस्थानों के कड़े विरोध के बाद दिल्ली सरकार ने वापस लिया निर्णय

संस्कृत की वृद्धि के लिए सब आवश्यक कार्य करेंगे : आगे भी संघर्ष लिए तैयार – धर्मपाल आर्य

ज्ञात हो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय द्वारा दिनांक 5 अप्रैल को जारी सर्कुलर पर कड़ा विरोध पत्र लिखते हुए मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री दिल्ली सरकार से कहा था कि ऐसा कोई कार्य न किया जाए जिससे संस्कृत की गरिमा को ठेस पहुंचे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अन्य भाषा-भाषी संस्थानों द्वारा भी इस सन्दर्भ में दिल्ली सरकार व शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखे गये व संस्कृत भाषा को हटाए जाने का कड़ा विरोध किया गया था, जिसके परिणाम स्वरूप दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय द्वारा दिनांक 05 अप्रैल 2016 को जारी उस सर्कुलर को वापस ले लिया है जिसमें कक्षा नवीं तथा दसवीं में संस्कृत/पंजाबी तथा उर्दू के स्थान पर व्यावसायिक कोर्स लगाने को कहा था। दिल्ली सरकार को यह निर्णय भाषा प्रेमी विभिन्न संगठनों द्वारा विरोध करने पर मजबूरी में लेना पड़ा। दिनांक 05 मई 2016 को शिक्षा निदेशालय द्वारा सर्कुलर जारी कर संस्कृत/ पंजाबी /उर्दू के स्थान

OFFICE OF THE DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT.OF NCT OF DELHI
DELHI SECRETARIAT: I.P.ESTATE
NEW DELHI-110002

It has been decided that Circular No. F.DE-45/VE/927/2014/756-62 dated 5.4.2016 and Circular No. F.DE-45/VE/927/2014/770-779 dated 5.4.2016 issued by the Directorate of Education (Vocational Branch) may be kept in abeyance till further orders.

Necessary orders be issued in this regard.

(MANISH SISODIA)
DY. CHIEF MINISTER
20.05.2016

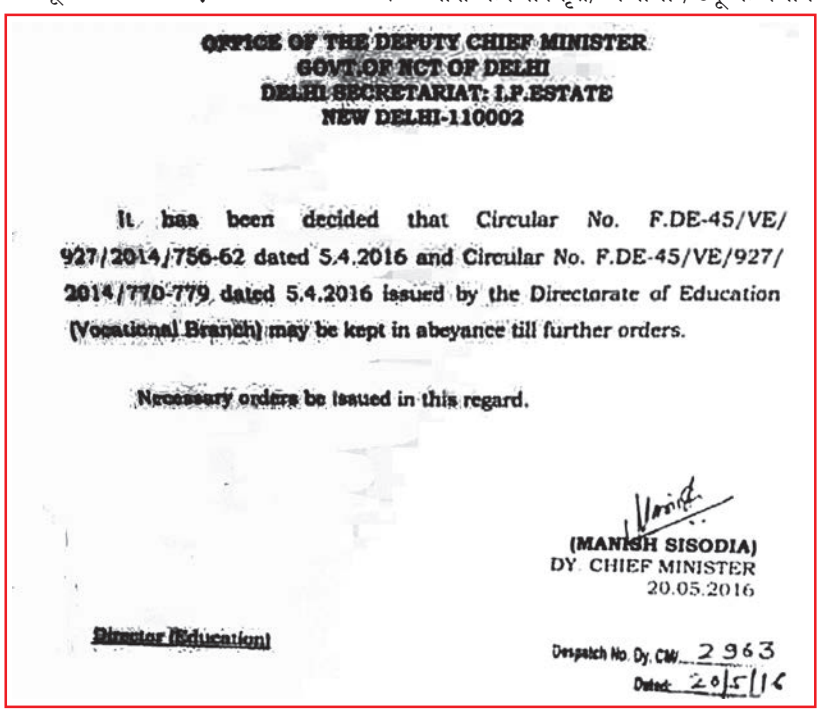

Director (Education)

Despatch No. Dy. CM/ 2963
Dated: 20/5/16

पर व्यावसायिक कोर्स लगाने को कहा था जो राष्ट्रीय शिक्षानीति 1968, नई शिक्षानीति 1986, त्रिभाषा सूत्र, दिल्ली स्कूल शिक्षा अधिनियम 1973 तथा दिल्ली सरकार के आदेश सं. 238 के खिलाफ था। सर्कुलर पर तत्काल संज्ञान लेते हुए संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली ने भारतीय भाषा मंच तथा शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के साथ बैठक की। सभी ने मिलकर विभिन्न स्तरों पर दिल्ली सरकार के निर्णय का विरोध किया। इस संबन्ध में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत, पंजाबी तथा उर्दू विभाग के विभागाध्यक्षों, प्रोफेसरों एवं शोधछात्रों ने बैठक कर विरोध जताया। शोधछात्रों द्वारा एक रैली निकाली गई तथा दिल्ली के मुख्य मंत्री तथा उपमुख्य मंत्री के पुतले जलाए गए। पंजाबी हैल्प लाइन तथा मिशन तालीम द्वारा भी विरोध किया गया। दिनांक 4 अप्रैल 2016 को

– शेष पृष्ठ 4 पर

'ओ३म्' पर आपत्ति क्यों ?

पिछले वर्ष जहाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सूर्य नमस्कार को लेकर विवाद जारी रहा था वहीं इस बार आयुष मंत्रालय के उस बयान के बाद राजनैतिक हलकों में बवाल बढ़ गया जिसमें कहा गया है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग सत्र से 45 मिनट पहले ''ओ३म्'' और कुछ वैदिक मंत्रों के जाप का प्रस्ताव है। इससे पहले यूजीसी के एक दिशानिर्देश में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों से कहा गया था कि आयुष मंत्रालय के योग प्रोटोकॉल का पालन करें जो 21 जून को योग दिवस समारोह के दौरान ''ओ३म्'' और संस्कृत के कुछ श्लोकों के उच्चारण के साथ शुरू होगा।ह्न हालाँकि बाद में आयुष मंत्रालय के संयुक्त सचिव अनिल कुमार गनेरीवाला ने कहा, ''योग सत्र से पहले ओ३म् का जाप करने की बाध्यता नहीं है। यह बिल्कुल ऐच्छिक है, कोई चुप भी रह सकता है। कोई इस पर आपत्ति नहीं करेगा।'' किन्तु इसके बाद भी जिस तरह राजनेताओं और धर्मगुरुओं के बयान आये वे कहीं न कहीं योग दिवस को राजनीति दिवस बनाते नजर आये।

उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी की धर्मपत्नी श्रीमती सलमा अंसारी ने भी अपने बयान में कहा है कि ओ३म् के उच्चारण से हमें ऑक्सीजन पाप्त होती है, इसलिए ओ३म् का विरोध करना गलत है।

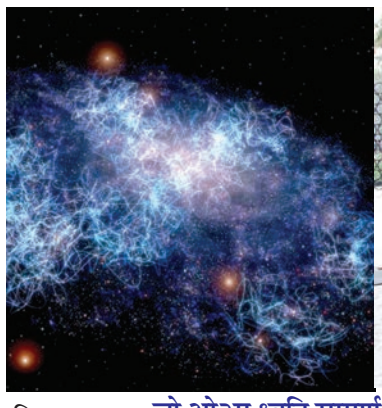

जो ओ३म् ध्वनि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, उसके उच्चारण में भला क्या आपत्ति!

दारुल उलूम देवबंद के मुफ़्ती अब्दुल कासिम नोमानी ने कहा है ओ३म् का जाप, सूर्य नमस्कार, और श्लोक पढ़ना इसे पूजा में तब्दील करता है जिसकी इस्लाम इजाजत नहीं देता; इस बिन सिर-पैर के विवाद की जड़ में मीडिया ने जिस प्रकार खबर बनाई वह देश की सामाजिक समरसता के लिए ठीक नहीं है; पर हम यह बता दें कि योग कोई पूजा पद्धति नहीं है, न ही योग का निर्माण किसी राजनैतिक दल की देन है। दुनिया भर के समस्त सम्प्रदायों से पहले स्वास्थ्य और चेतना का विषय योग था और आज भी है। पहली बात तो यह कि योग और धर्म आनंद का विषय है और मात्र कुछ शब्दों के बोलने से धर्म नहीं टूटा करते। दूसरा योग से ओ३म् का हटना बिलकुल ऐसा है जैसे शरीर से एक हाथ काट देना। इस मामले पर गरीब नवाज़ फाउन्डेशन के अध्यक्ष मौलाना अंसार रजा ने अपनी राय रखते हुए कहा कि यह योग को धर्म से जोड़ने की साजिश है जिससे हमारे धर्म को खतरा है। इस पर योगगुरु आचार्य प्रतिष्ठा ने जबाब देते हुए कहा कि मन की स्थिति को जानना ही योग, वस्ले दीदार है और योग ही सर्वोपरि धर्म है। ओ३म् शब्द से अल्लाह के इस्लाम को कोई खतरा नहीं है, हाँ मुल्ला के इस्लाम को खतरा हो तो कहा नहीं जा सकता! बहरहाल यह सिर्फ एक बहस थी। योग किसी के लिए अनिवार्य नहीं, जिसे अच्छा स्वास्थ चाहिए वह योग करे। किन्तु इसमें धर्म को घुसेड़ कर अपनी राजनीति न करे। ओ३म् केवल किसी शब्द का नाम नहीं है। ओ३म् एक ध्वनि है, जो किसी ने बनाई नहीं है। यह वह ध्वनि है जो अंतरात्मा से स्वयं जागृत होती है कण-कण से लेकर पूरे अंतरिक्ष में हो रही है। समस्त संसार के धर्म ग्रन्थ जिसके गवाह है। योग कहता है कि इसे सुनने के लिए शुरुआत स्वयं के भीतर से ही करना होगी। जब बात अच्छे स्वास्थ की हो तो ओ३म् से एतराज क्यों ?

– शेष पृष्ठ 7 पर

सम्पादकीय

डुबकी! राजनैतिक या समाजिक?

आजकल उज्जैन सिंहस्थ कुंभ की गूंज धार्मिक जगत से अधिक राजनैतिक गलियारों में ज्यादा सुनाई दे रही है। मुद्दा है केंद्र में सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष अमित शाह का क्षिप्रा नदी के वाल्मीकि घाट पर दलित साधुओं सहित अन्य साधुओं के साथ स्नान करना और उनके साथ समरसता भोज कार्यक्रम के तहत भोजन ग्रहण करना। जहाँ राजनैतिक दल इस स्नान को राजनीति से प्रेरित बता रहे है तो वहीं मीडिया ने संत समाज को भी जातिवाद के खेमे में बाँटने में देर नहीं लगाई। जबकि उज्जैन सिहस्थ कुंभ के प्रभारी मंत्री भूपेंद्र सिंह ने कहा है कि बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह के स्नान, भोज को राजनीति के नजरिए से नहीं देखना चाहिए। उनकी ओर से यह समाज में भेदभाव को खत्म करने का प्रयास मात्र है परन्तु भारतीय समाज में व्याप्त राजनितिक जातिवाद की आग ने साधुओं के तम्बुओं में भी पहुँचने में देर नहीं लगाई और अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरी ने अमित शाह द्वारा सामाजिक समरसता के लिए लगी इस डुबकी पर यह कहते हुए आपत्ति जताई कि संत समाज के अन्दर जातिवाद नहीं है। संत समाज में जहां साधू की जाति नहीं पूछी जाती वहां जाति के नाम पर ही समरसता का ढिंढोरा पीटना अपने-आप में एक राजनैतिक षड्यंत्र के सिवा और कुछ नहीं है।

यदि राजनेता वास्तव में बुनियादी तौर पर समाज से जातिगत् भेदभाव समाप्त करना चाहते हैं तो उन राजनैतिक दलों को जो जातियों के नाम पर वोट बटोरते हैं उन क्षेत्रों राज्यों में जाकर समरसता का पाठ पढ़ाना चाहिए जहां दलित दूल्हे को घोड़ी पर सवार नहीं होने दिया जाता, उन राज्यों में जहां स्कूल में बच्चों को दलितों के हाथ का बना खाना खाने से परहेज़ होता है। जिन मंदिरों में दलितों के प्रवेश को स्वयंभू उच्चजाति के लोगों ने वर्जित कर रखा है, जहां आज भी दलितों को अपने बराबर कुर्सी अथवा चारपाई पर बैठने की इजाज़त नहीं है जहां आज भी स्वयंभू उच्चजाति के लोगों द्वारा दलितों को अलग बर्तनों में खाना व पानी दिया जाता हो, महाराष्ट्र के अन्दर जहाँ दलित जाति की औरतों को अपने कुएँ से पानी नहीं भरने दिया जाता हो, वहां जाकर समरसता की डुगडुगी बजाने की कोशिश करनी चाहिए न कि ऐसी जगहों पर जहां पहले से ही सामाजिक समरसता का बोलबाला हो।

यदि आज भी जातिवाद को करीब से जाकर देखें तो आधुनिक युग में राष्ट्र फिर वैसी ही समस्या का सामना कर रहा है जैसी पहले कर रहा था। यह मानवता को सुरक्षा और सुख शांति प्रदान न करने में मध्ययुगीन प्रणाली जैसी दिख रही है परन्तु आज की नई चुनौतियों में जातिवाद राष्ट्र और समाज के विकास में बाधक बनता दिखाई दे रहा है। यह आवश्यक नहीं है कि किसी भी राष्ट्र में जनसँख्या एक ही जाति, क्षेत्र या भाषा से जुड़ी हो परन्तु एक ही राष्ट्र का नागरिक होने के नाते उनकी निष्ठा का केंद्र एक होना आवश्यक है। हाल के वर्षों में देश के अन्दर जातिवाद के बीज रोपने के कार्य का श्रेय यदि सबसे ज्यादा किसी को जाता है तो वह हमारे देश के नागरिकों से ज्यादा राजनैतिक दलों को जाता है। परन्तु उपरोक्त दोष किसी एक दल को नहीं दिया जा सकता इसमें सबकी सहभागिता दिखाई देती है। जिसका उदेश्य सिर्फ और सिर्फ राजनैतिक लालसा है। अत: निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि राजनितिक दल एक उदार लोकतान्त्रिक राजनितिक व्यवस्था के साथ एक उदार समाज के निर्माण में भी अपनी अहम् भूमिका निभा सकते हैं किन्तु इन दलों ने अपनी राजनैतिक अभिलाषा का पहिया हमेशा जातिवाद की खाइयों से ही होकर निकाला।

आज हमारे राजनेताओं को अपनी दृष्टि व्यापक करनी होगी और यह समझना होगा कि राजनीति राष्ट्रनिर्माण का काम है। हर एक राजनीतिक दल को वोट चाहिए और उसके लिए सही तरीका यह है कि वे अपने दल के लिए वोट जुटाने में विचारधारा और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण यानिह्वविकास की योजना का प्रचार-प्रसार करें।ह्वजनमत बनाना प्रत्येक राजनीतिकह्वदल का कर्त्तव्य है लेकिनह्वजाति आधारित राजनीति समाज के गठन में बाधक है। क्या जातिवादी दल या नेता ही मरणासन्न जाति व्यवस्था को बार-बार पुनर्जीवित नहीं कर रहे हैं? इस पर जनता और तंत्र में बैठे सभी लोगों को गहन विचार करने की जरूरत है, अन्यथा जनतंत्र खतरे में पड़ह्वजायेगा। अमित शाह द्वारा लगाई यह डुबकी सामाजिक समरसता के लिए है या राजनैतिक लाभ के लिए यह तो राजनैतिक धड़े जानते होंगे, परन्तु आज जिस प्रकार देश के अन्दर जातिवाद खत्म होने के बजाय और अधिक पनप रहा है उसे देखते हुए हम अमित शाह के इस कदम की प्रशंसा जरुर कर सकते है; पर मन में एक कसक है कि यदि हमारे राजनेताओं ने यह डुबकी आज से 68 वर्ष पहले लगी होती तो आज देश के अन्दर जातिवाद का जहर इतना न फैला होता! -*सम्पादक*

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

वेद-स्वाध्याय

वह सर्व हितकारी है

उरुं नो लोकं अनुनेषि विद्वान् स्वर्वत् ज्योतिरभयं स्वस्ति। ऋष्वात इन्द्र स्थविरस्य बाहू उपस्थेयाम शरणा बृहन्ता।। -ऋ. 6/47/8; अथर्व. 19/15/4
ऋषि:गर्ग:।। देवता : इन्द्र:।। छन्द: विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - **इन्द्र**= हे इन्द्र! **त्वं विद्वान्**=तू सर्वज्ञ **न: उरुं लोकं अनुनेषि**=हमें उस महान् विस्तृत लोक में पहुंचा देता है जहां **स्वर्वत्**= आनन्द **ज्योति:**=प्रकाश **अभयम्**= अभय और **स्वस्ति**=कल्याण ही है। हे परमेश्वर! **ते स्थविरस्य बाहू**= तुझ महान् देव के बाहू **ऋष्वा**=सब विघ्न-बाधाओं का नाश करने वाले है। **बृहन्ता शरण**= हम उस तुम्हारी (बाहुओं की) अपार शरण मे **उपस्थेयाम** = बैठ जाएं।

विनय - हे परम ईश्वर! हे सब-कुछ जानने वाले! तुम हमें ज्ञान देकर कभी अपने विस्तीर्ण-खुले, अपार लोक में पहुंचा देते हो-उस लोक में जहां कि आनन्द-ही-आनन्द है और ऐसा आनन्द है कि उसकी प्रतिक्रिया में दु:ख, सन्ताप का जन्म नहीं हो सकता; उस ज्योतिर्मय लोक में, जहां प्रकाश का साम्राज्य है और जहां विस्तीर्ण शुभ्र प्रकाश-सागर में अज्ञान व अन्धकार की छाया तक नहीं पड़ सकती, उस लोक में जहां परिपूर्ण अखण्ड अभयता है, इन भय के भूतों का जिनसे हम यहां हरदम सताये रहते हैं, जहां नामोनिशान नहीं है और उस लोक में जहां कि कल्याण-ही-कल्याण बरसता है, अकल्याण की जहां कल्पना तक नहीं हो सकती। हे इन्द्र! तुम ऐसे लोक के वासी हो। हम मनुष्य को, जीवों को वहां ले जा सकते हो। हे मेरे स्वामिन्! अपनी बाहुओं को फैला दो और अपनी महान् शरण मे हमें ले-लो। हे महान् देव! तुम्हारे ये बाहू सब पाप-ताप का ध्वंस करने वाले हैं, क्लेश-कष्ट का नाश करने वाले हैं, विघ्न-बाधाओं को हटाने वाले हैं। इनकी महान् शरण का आश्रय पाये हुए को दु:ख, अज्ञान, भय व अकल्याण का स्पर्श भी कैसे हो सकता है? अपने बाहू फैलाओ, करुणामय! हमें उठाने के लिए अपने ये वात्सल्यमय बाहू बढ़ाओ जिससे कि हम तुम्हारी परम शरण में आ बैठें, वह गोद जिसमें बैठकर कोई क्लेश नहीं, भ्रम नहीं, भय नहीं, आमय नहीं।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

शास्त्रार्थ महाराथी पं. रामचन्द्र देहलवी : एक संस्मरण

बात 1967 की है। मैं उस समय आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली का महामंत्री था। प्रधान लाला न्यादरमल गुप्ता जी थे और कोषाध्यक्ष श्री बाबू राम गुप्ता जी थे। श्री नरेन्द्र गुप्ता (वरिष्ठ उपप्रधान थे। उस समय आर्य समाज बाजार सीताराम का तीन दिन का वार्षिकोत्सव रामलीला मैदान दिल्ली में बड़े धूमधाम से मनाया जाता था।) उसमें भाग लेने के लिए प्रसिद्ध संन्यासी श्री बुद्धदेव विद्यालंकार, ठाकुर अमर सिंहजी, डॉ. मेहरचन्द महाजन (भारत के मुख्य न्यायाधीश), लाला राम गोपाल शालवाले आदि अनेक सन्यासी, आर्य नेता भाग लेते थे।

कार्यकारिणी ने निर्णय लिया कि इस बार पं. रामचन्द्र देहलवी जी को तीनों दिन के लिए मुख्य वक्ता तथा शंका समाधान के लिए बुलाया जाये। निर्णय के अनुसार मैं अपने कोषाध्यक्ष श्री बाबूराम आर्य तथा उपप्रधान श्री नरेन्द्र गुप्ता जी के साथ बस द्वारा हापुड़ पंडित जी के निवास पर पहुंचा। पंडित जी ने द्वार पर एक रस्सी बांधी हुई थी और दूसरे सिरे पर अपने कमरे में घण्टी बांधी हुई थी। जो कोई आता रस्सी को हिलाता घण्टी बजती ओर पंडित जी बाहर आते। निवास पर पहुंचकर हमने रस्सी हिलाई और पंडित जी हम लोगों को देखकर बहुत खुश हुए और हमें आदर पूर्वक अन्दर ले गये। कुशल क्षेम के बाद आने का कारण पूछा। हमने उन्हें अधिवेशन के बारे में निमन्त्रण और विस्तार से बताया। पंडित जी ने हमारा निमन्त्रण इस शर्त पर स्वीकार किया कि आप लोग आज रात को यहीं विश्राम करें तभी मैं आऊंगा। हमने उनकी आज्ञा का पालन किया और रात को उनके यहां विश्राम किया। हमने दोपहर का भोजन पंडित जी के साथ किया और दिल्ली की समाजों के बारे में चर्चा हुई। दोपहर को विश्राम किया और सायंकाल नाश्ता किया और हम तीनों हापुड़ में घूमने के लिए चल दिये। लगभग सायं 8 बजे जब हम सब वापस आये तो मालूम पड़ा कि पंडित जी अपने हाथ से खीर बना रहे थे। उनकी सहायता के लिए एक नवयुवक भी उपस्थित था। हम लोगों ने सामूहिक रूप से बड़े प्रेम से पंडित जी के साथ भोजन किया जो हम जीवन भर नहीं भूल सकते। पंडित जी का आशीर्वाद लेकर अगले दिन हम दिल्ली के लिए रवाना हुए।

पंडित जी का प्रवचन सुनने का अनेक बार अवसर मिला। वे हमेशा कहते थे कि बच्चों को समाज में जरूर लाएं चाहे वे शोर-दंगा भी करें। पंडित जी की महानता सर्वतोमुखी थी। वे हिन्दी, अंग्रेजी, अरबी, संस्कृत तथा फारसी के ज्ञाता थे। उनको कुरान का इतना ज्ञान था कि बड़े-बड़े मौलवी भी उनका लोहा मानते थे। वे सिद्धान्तों के प्रति व्रज से भी कठोर और नम्रता के वे स्वयं हस्ताक्षर थे। सन् 1881 की रामनवमी को उनका जन्म साधारण परिवार में हुआ था। अपनी लगन से वे आर्य जगत के सितारे हिन्द बन गये थे। उन्हें हृदय की गहराईयों से नमन करते हैं। - *मामचन्द रिवाड़िया*
पूर्व मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

मोक्ष की आवृत्ति

मोक्ष के साधन कर्म तथा ज्ञान उभय हैं और मोक्ष में जीव ब्रह्मभाव को प्राप्त नहीं होता हैं अपितु जीव ही रहकर आनन्द को भोगता है। इस लेख में इस विषय पर विचार करना है मोक्ष नित्य है वा अनित्य है अर्थात् जीव मोक्ष को प्राप्त करके पून: किसी समय बन्ध को प्राप्त होता है अथवा सर्वदा मुक्तावस्था में ही रहता है। इस विषय में आर्य समाज का सिद्धांत है जीवन के लिए मोक्षावस्था नित्य नहीं है अनित्य है।

जो मोक्ष को नित्य मानते हैं उनको इसका विचार करना आवश्यक है। जो वस्तु नित्य होती है उसका कारण नहीं होता है, जिसका कारण हो वह अनित्य होगी। जैसे घट पट आदि के काष्ठ, तन्तु आदि कारण होने से वह अनित्य हैं और आकाश का कारण न होने से वह नित्य है। इस नियम के अनुसार यदि मोक्ष नित्य है तो उसके कर्म अथवा ज्ञान कारण क्यों माने जाते हैं प्रकरण पुस्तकों में वैराग्यादि बाह्य साधन हैं और श्रवणादि अंतरग साधन है। अथवा कर्मादि बाह्यसाधन हैं और ज्ञान अंतरग साधन हैं। यह बातें क्यों लिखी हैं और प्रत्येक महात्मा धर्म करो की रट क्यों लगाता है जो वस्तु नित्य होती है वह साध्य होती है और मोक्ष तो साध्य है यह सिद्धान्त सर्वत्र है इसलिए इस समय तक यह दु:साहस किसी ने भी नहीं किया है कि मोक्ष को साध्य न माने इस अवस्था में मोक्ष नित्य न होगी।

जो वस्तु जन्य होती है वह जिस प्रकार सादि होती है उसी प्रकार सात भी होती है ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो सादि अनन्त हो। इस विषय में कई प्रध्वंसाभाव को उदाहरण में रखा करते हैं नैयायिक प्रध्वंसाभाव को सदि अनत मानते हैं। इसे समझने के लिए कुछ विस्तार से लिखता हूँ। जिस समय किसी पदार्थ का नाश होता है वह उसका प्रध्वसाभाव है जैसे जिस समय घट मुग्दरादि से टूट जाता है पट अग्नि से जल जाता है। उस समय घट और पट का स्वरूप नष्ट हो जाता है वही घट पट का प्रध्वसभाव है यदि इसको सात मान लिया जाय तो उनके मत में प्राग्भाव, प्रतियोगी, प्रध्ववसाभाव इन तीनों में से किसी समय कोई एक होता है। जब घट पट की उत्पत्ति न थी तब तो उनका प्राग्भाव था जब घट, पट बन गये तब प्राग्भाव का नाश होकर प्रतियोगी घट, पट बन गए और इस काल में प्राग्भाव, प्रध्वसाभाव नहीं हैं प्रतियोगी है और उत्पत्ति से पूर्व प्रतियोगी प्रध्वसाभाव न थे प्राग्भाव था अब जब घट, पट का नाश होगा उस समय प्रध्वसाभाव उत्पन्न होगा। इस समय प्रतियोगी का नाश होने से यह नहीं है और प्राग्भाव का नाश प्रतियोगी की उत्पत्ति काल में हो गया था दोनों के न होने से तीसरा प्रध्वसाभाव है यदि उसको सात मानें तो उसके नाश के समय के साथ-साथ इनमें से किसी एक का भाव होना चाहिये इनका भाव होना असंभव है अत: प्रध्वंसाभाव सादि अनन्त है।

जैसे प्रध्वंसाभाव सादि है इसी प्रकार मोक्ष भी सादि और अनंत है इसका उत्तर यह है प्रध्वसाभाव अभाव रूप है। अभाव को भाव समता नहीं होती इसलिए प्रध्वसाभाव को सादि अनत होने पर भी मोक्ष जो भाव रूप है वह सादि अनंत न होगी यदि मोक्ष को केवल दु खाभाव रूप माना जाय तो यह उदाहरण माना जा सकता था परन्तु मोक्ष को केवल दु:खाभाव रूप माना जाय तो यह उदाहरण माना जा सकता था; परन्तु मोक्ष को हम दु:खाभाव के साथ-साथ सुख रूप भी मानते हैं। इस लिए जो सुख उत्पन्न हुआ है उसका नाश भी अवश्य होगा जो उस सुख का नाश है वही मोक्ष की अनित्यता सिद्ध करता है इस प्रकार युक्ति से मोक्ष की नित्यता सिद्ध नहीं होती।

अब रहा प्रमाणवाद। मोक्ष की नित्यता में निम्न प्रमाण दिये जाते हैं।

1 अनावृत्ति शब्दात्। वेदात दर्शन 4-4-22

2 ब्रह्मलोकमभिसंपद्यते न च पुनरावर्तते।

छा. 8।15।1

3 स तु त्तपदमाप्रोति यस्माद्धयो न जायते।

कठ. 3।8

4 तस्मिन्वसति शाश्वती समा:। पृ. 5-10-1

5. यद्गत्वा न निवर्तते तद्धाम परम मम। गीता

अर्थ- श्रुति में लिखा है आवृत्ति नहीं होती। ब्रह्म लोक को प्राप्त करके पुन. जन्म नहीं लेता है।

वह उस पद को प्राप्त होता है जिससे फिर जन्म नहीं होता है वहा अनंत काल तक वास करता है।

जहा जाकर फिर नहीं आता वही मेरा परम धाम (मेरा स्वरूप) है। इनको देख कर कई कहते है पुनरावृति नहीं होती यदि वह ध्यान से इनको देखे और इन पर विचार करके दूसरे वाक्यों से इनकी संगति करे तो इनका भाव प्रतीत हो जाय। इनमें जो आवृति का निषेध है वह पुनर्जन्म वत् इसी समय आवृत्ति का निषेध है न कि मुक्ति की अवधि पूरी होने पर आवृत्ति का निषेध।

वेदात सूत्र स्वयं कहता है कि शब्द ऐसा कहता है इस लिए आवृत्ति है इसमें छादोग्योपनिषद् का 8-15-1 का कथन है उसके पूर्व 'यावदायुषम्' पाठ है जिसके अर्थ मुक्ति की अवधि है और इसी उपनिषद् में एक और पाठ इस प्रकार है।

'सएतानब्रह्म गमयत्येश देव पथो ब्रह्म पथ एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानवावर्ते नावर्तेते। छा. 4-15-5

वह इस मार्ग से ब्रह्म को प्राप्त होता है इसी का नाम देव पथ, ब्रह्म पथ है इससे ब्रह्म को प्राप्त इस मानवावर्त में फिर नहीं आता है अर्थात् दूसरे कल्प में आता है। उपनिषद् की मिताक्षरा नाम की टीका में इसके अर्थ लिखते समय लिखा है।

कल्पातरेषु आवर्तेत एवेममिति विशेपणात्।

भावार्थ-इमं विशेषण होने से कल्पांतर में जन्म होता है। यही बात स्वामी आनन्दगिरि जी ने इसकी टीका में लिखी है। दोनों वाक्यों में ब्रह्म की प्राप्ति है इस लिये वह निषेध इस कल्प के लिये है सर्वदा के लिए नहीं है इसी वाक्य का पोषक महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में माडूक्योपनिषद् का यह वाक्य दिया है

ते ब्रह्म लोकेषु प्रान्त काले परामृत: परिमुच्यति सर्वे। मु. 3-2-6

कल्प के अन्त में (मोक्ष की अवधि समाप्त होने पर सर्व मोक्ष से छूट कर जन्म प्राप्त करते हैं यह इसका भाव है और गीता में दो वाक्य दूसरे हैं।

बहूनि में व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।

तानह वेद सर्वाणि नित्वं वेत्थ परंतप।।

गीता 4।5

हे अर्जुन। तेरे और मेरे अनेक जन्म बीत गये मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

आब्रह्म भुवनालोको पुनरावतीनामर्जुन (गीता)

ब्रह्म लोक प्रर्यन्त सब पुनरावर्ती हैं।

श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी ने 'वैदिक धर्म' नाम की पुस्तक में चार मन्त्र दिये हैं वह चारो ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 62 के हैं उनमें से मैं एक लिखता हूँ-

ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृत्यु त्वमानशे। तेभ्यो भद्रमगिरसोवोअस्तु प्रतिगृभ्णीत मानवं सुमेधस।। ऋ. 10-62।1

अर्थ-जिन महात्माओं ने यज्ञ, दक्षिणा से इन्द्र का सख्य मोक्ष रूप को प्राप्त किया है ऐसे उत्तम बुद्धियुक्त ज्ञानी मनुष्य शरीर को पुन: प्राप्त करते हैं वा करें और उनका कल्याण हो उनका सुख हो।

इस प्रकार वेद, उपनिषद, गीता, आवृत्ति में प्रमाण हैं और ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में ऐसा लिखा है।

''प्रथम तो जीव का सामर्थ्य शरीरादि पदार्थ और साधन परिमित हैं पुन उसका फल अनन्त कैसे हो सकता है? अनन्त आनन्द को भोगने का असीम सामर्थ्य कर्म और साधन जीवों में नहीं इस लिए अनत सुख नहीं भोग सकते। जिनके साधन अनित्य हैं उनका फल नित्य कभी नहीं हो सकता'' पृष्ठ 299

इस प्रकार युक्ति और प्रमाण से मुक्ति की अनित्यता सिद्ध है इसलिए आर्य समाज के सिद्धातानुकूल मुक्त जीव की मुक्ति की अवधि पूरी होने पर आवृत्ति होना आवश्यक है। ***-स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी***

प्रेरक प्रसंग

मैं वैदिक धर्म का उपदेशक हूँ

पश्चिमी पंजाब का एक परिवार बस में यात्रा कर रहा था। इस परिवार को अपने सगे - सम्बन्धियों के यहाँ शादी पर जाना था। इन्होंने मुलतान में बस बदली। बस बदलते हुए इनका एक ट्रंक अनजाने में बदल गया। किसी और यात्री का ट्रंक भी ठीक उन्हीं के जैसा था। आगे की बस द्वारा यह परिवार अपने सगे-सम्बन्धियों के घर पहुँचा। वहाँ जाकर ट्रंक खोला तो उसमें तो पुस्तकें व रजिस्टर, कापियाँ ही थीं।

जिस यात्री के हाथ इनका ट्रंक आया, वह भी मुलतान से थोड़ी दूरी पर कहीं गया। वहाँ जाकर इसने ट्रंक खोला तो इसमें आभूषण व विवाह-शादी के वस्त्र थे। इसे यह समझने में देर न लगी यह सामान तो बस में यात्रा कर रहे किसी ऐसे परिवार का है जिसे विवाह में सम्मिलित होना है। सोचा वह परिवार कितना दु:खी होगा, तुरन्त लौटकर ट्रंकसहित मुल्तान आया। बस अड्डे पर बैठकर बड़े ध्यान से किसी व्याकुल, व्यथित की ओर दृष्टि डालता रहा।

उधर से वे लोग पुस्तकों वाला ट्रंक लेकर रोते-धोते आ गये। उनको थोड़ा सन्तोष था कि पुस्तकों, रजिस्टरों पर ट्रंकवाले का नाम पता था, परन्तु साथ ही संशय बना हुआ था कि क्या पता वह भाई अपना ट्रंक न पाकर खाली हाथ ही रहा हो और अपने ट्रंक के लिए परेशान हो। इस परिवार को ट्रंक सहित रोते-चिल्लाते आते देखकर दूर बैठे दूसरे यात्री ने पुकारा और कहा कि दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं, यह लो तुम्हारा ट्रंक। अपने माल की पड़ताल कर लो।

अब इस परिवार की प्रसन्नता का कोई पारावार ही नहीं था। पुस्तकों वाला ट्रंक लौटाते हुए अपना बहुमूल्य सामान लेकर उस यात्री को बहुत बड़ी राशि पुरस्कार स्वरूप भेंट करने लगे तो वह यात्री बहुत विनम्रता से गरजती हुई आवाज में बोला, ''यह क्या कर रहे हो?'' ''यह आपकी इमानदारी के लिए प्रसन्नतापूर्वक पुरस्कार दिया जाता है।'' उस परिवार के मुखिया ने कृतज्ञतापूर्वक कहा। इस यात्री ने कहा ''ईमानदारी इसमें क्या है? यह तो मेरा कर्त्तव्य बनता था। मैं वैदिक धर्म का उपदेशक हूँ। ऋषि दयानन्द का शिष्य हूँ।''

उस भाई ने एक पैसा भी स्वीकार न किया। सारे क्षेत्र में दूर-दूर तक आर्यसमाज की वाह! वाह! होने लगी। सब ओर इस घटना की चर्चा थी। स्वामी वेदानन्दजी तीर्थ ने यह कहानी उन दिनों एक लेख में दी थी।

यह पुस्तकोंवाला भाई आर्यसमाज का एक पूजनीय विद्वान् पण्डित मनुदेव था। यही विद्वान् आगे चलकर पण्डित शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थमहारथी के नाम से विख्यात हुआ। ऐसे लोग मनुजता का मान होते हैं।

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।**

यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 9 से 15 मई, 2016 तक दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर में प्रात: 8 से 10 बजे तक आयोजित किया गया। इस शिविर में विद्यालय के 50 बच्चों के साथ-साथ अध्यापक एवं शिक्षकोत्तर स्टाफ के सदस्यों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह आयोजन पूर्णत: सफल रहा। आर्यसमाज तिलक नगर एवं विद्यालय के पदाधिकारियों ने भरपूर सहयोग प्रदान किया। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने बहुत ही सरल विधि से यज्ञ प्रशिक्षण प्रदान कराया। यज्ञ शैली इतनी सरल थी कि छोटे से छोटे बच्चों को भी प्रक्रिया आसानी से समझ आ गई। यह प्रशिक्षण यज्ञ की एकरूपता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। विद्यालय प्रधान श्री वीरेन्द्र सरदाना जी एवं प्रधानाचार्या श्रीमती माया तिवारी ने प्रशिक्षण हेतु सभा का धन्यवाद किया।- **नीरज आर्य, प्रबन्धक**

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर आरम्भ

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं आत्म रक्षा प्रशिक्षण शिविर हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग नई दिल्ली में 22 मई 2016 प्रारम्भ हुआ जिसका शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। आर्य नेता श्री रवि चड्ढ़ा जी द्वारा ओ३म् ध्वज फहराया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि वरिष्ठ नारिक केसरी क्लब की चेरय पर्सन श्रीमती किरण चोपड़ा ने कहा ''सुसंस्कृत, सभ्य बालिकाएं देश का सुन्दर भविष्य हैं। उनके कोमल मन पर जो संस्कार पड़ेंगे वही उनके जीवन की नींव मजबूत बनाने में सहायक होंगे।'' श्रीमती चोपड़ा ने आगे कहा ''महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिला सशक्तिकरण के लिए प्रबल आन्दोलन किया। उन्होंने सामाजिक चेतना, उत्पन्न करके सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियां दूर कीं। आज कन्याओं को सक्षम बनाने के लिए आत्मरक्षा भी जरूरी है।'' समाज सेवी कार्यों के लिए आर्य वीरांगना दल की साध्वी सुमेधा आर्या, डॉ. सुनीति, संचालिका शारदा आर्या, स्नेह भाटिया, सुनीति जावा, आचार्य अमृता ने वरिष्ठ नागरिक केसरी कल्ब की अध्यक्षा श्रीमती किरण चोपड़ा को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। विदुषी डॉ. उमा शशि दुर्गा, सत्यानन्द आर्य, डॉ0 रचना चावला, सुरेन्द्र कोछड़, बीना आर्या, राज भारत भारद्वाज, शीला ग्रोवर इत्यादि महानुभावों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। शिविर में दिल्ली एवं एन. सी.आर. की लगभग 200 आर्य वीरांगनाएं भाग ले रही हैं। शिविर का समापन एवं दीक्षान्त समारोह 29 जून को आयोजित किया जाएगा। - ***मन्त्री***

प्रथम पृष्ठ का शेष

भाषा एकता के आगे....

दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री मंजीत सिंह जी द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गयी जिसको मीडिया के विभिन्न लोगों द्वारा किया गया। विभिन्न अखबारों में यह खबर 5 मई 2016 को छापी गई । इस विषय में पी टी सी चैनल पर लाइव बहस का सीधा असर दिल्ली सरकार पर हुआ। संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा विभिन्न संगठनों द्वारा मुख्य मंत्री, उपमुख्य मंत्री शिक्षा सचिव तथा शिक्षा निदेशक को पत्र लिखे गए तथा व्यक्तिगत मुलाकातें भी की गईं। दिनांक 13 मई 2016 को संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली ने शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मार्गदर्शन में एडवोकेट श्रीमती मोनिका अरोड़ा के माध्यम से शिक्षानिदेशक को लीगल नोटिस भेजा। विभिन्न दबावों से परेशान होकर दिल्ली सरकार ने संस्कृत, पंजाबी तथा उर्दू को हटाने का सर्कुलर 05 मई 2016 को स्थगित करने का निर्णय लिया है। भाषाप्रेमी विभिन्न संगठनों ने दिल्ली सरकार तथा मीडिया का हार्दिक धन्यवाद किया है एवं भविष्य में भी सहयोग हेतु अपेक्षा की है। यह एक सामूहिक प्रयास था जिसमें सभी भाषा भाषियों ने एकजुट होकर दिल्ली सरकार का विभिन्न स्तरों पर विरोध किया। स्वतन्त्र भारत में भाषाई एकता का यह पहला उदाहरण दिखाई दिया है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के सचिव श्री अतुल कोठारी ने कहा कि भाषाएं तोड़ने नहीं, जोड़ने का काम करती हैं। यह प्रयास इसका जीवन्त उदाहरण है जिसका हम सभी को अनुसरण करना चाहिए। दिल्ली सरकार के इस फैसले का दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली की समस्त आर्य समाजें स्वागत करती हैं व धन्यवाद देती हैं और आशा करती है कि दिल्ली सरकार संस्कृत की गरिमा को बनाए रखने के लिए संस्कृत उत्थान सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण कार्यों को प्रोत्साहन देगी।

संस्कृत सम्भाषण शिविर सम्पन्न

संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली व संस्कृत भारती दिल्ली के तत्वावधान में 20 मई से 29 मई के मध्य चलने वाले संस्कृत सम्भाषण शिविर के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कर रहे संस्कृत शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉ. बृजेश गौतम ने कहा कि 'जिस प्रकार संस्कृत भाषा शुद्ध है वैसे ही हमें अपने आचरण व कर्म भी शुद्ध रखने चाहिए।' संस्कृत शिक्षक संघ के महासचिव डॉ. वी. दयालु, कार्यक्रम के संयोजक

संस्कृत शिक्षक संघ के उपाध्यक्ष संदीप उपाध्याय जी, कार्यक्रम के अतिथि आर्य समाज मानसरोवर पार्क के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद शर्मा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम व्यवस्थापक आर्य समाज रोहताश नगर के प्रधान श्री राम पाल पांचाल ने संस्कृत सम्भाषण शिविर की महत्ता पर प्रकाश डाला। शिविर में श्री सुशील पांचाल, श्री संयज स्वामी, श्री नीरज कुमार, श्री रोहित आर्य, श्री फणीश पवार व ज्ञानदीप मॉडल स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती ललिता पांचाल मौजूद थीं।-***उपाध्यक्ष***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित कक्षाएं

व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण कक्षा

दिनांक : 8 मई 2016 से निरन्तर प्रति रविवार सायं 5 से 7 बजे
स्थान : गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम, आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लॉक हरी नगर, नई दिल्ली-110064
सम्पर्क: महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज (9650183184)

वेद मन्त्र पाठ कक्षा

दिनांक : 7 मई 2016 से निरन्तर प्रति शनिवार सायं 4:30 से 6 बजे
स्थान : आर्य समाज जनकपुरी सी-3, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
अध्यापन : आचार्य प्रणवदेव शास्त्री
सम्पर्क : शिव कुमार मदान (9310474979), श्री अजय तनेजा (9811129892)

प्रशिक्षण के उपरान्त सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

15वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 15वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्यसमाज मन्दिर ए ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में दिनांक 3 जुलाई 2016 को आयोजित किया जाएगा। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र-अतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। **पंजीकरण शुल्क मात्र 300/- रुपये।** पंजीकरण फॉर्म पृष्ठ 5 पर प्रकाशित किया गया है। फार्म की फोटोप्रति भी मान्य है। पंजीकरण फार्म **www. thearyasamaj.org** से डाउनलोड भी किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुन देव चड्ढा राष्ट्रीय संयोजक, मो. 9414187428
एस.पी. सिंह दिल्ली संयोजक, मो. 9540040324

अद्भुत गुरु विरजानन्द सरस्वती जी व अद्भुत शिष्य दयानन्द जी

ऋत ज्ञान प्रकाश से गुरु व शिष्य ने संसार में वैचारिक चमत्कार कर दिया

जन साधारण का विचार है कि परमात्मा स्वयं अवतार धारण करके पृथ्वी पर जन्म लेते हैं यह महा अज्ञान है, क्योंकि ईश्वर अजन्मा अव्यय, निराकार व सृष्टिकता है वह साकार कैसे हो सकता है। यह अलग बात है कि मोक्ष से लौटकर मुक्त आत्मा संसार में अधर्म का नाश करने के लिये जन्म लेती है। जीवों का जन्म दो प्रकार से होता है एक कर्म बद्ध जीव दूसरा कर्मों के बन्धन से मुक्त जीव।

जैसे महाभारतके इतिहास में अर्जुन कर्मबद्ध जीव है और श्री कृष्ण कर्म से मुक्त जीव हैं। आज हम ऐसे ही दो महापुरुषों का चिन्तन कर रहे हैं जो दोनों अर्थात् गुरु विरजानन्द सरस्वती जी व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी संसार के विशेषणा, लोकेषणा व पुत्रेषणा से मुक्त जीव थे। वह ऋत सत्य ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर संसार का कल्याण करते-करते महाप्रयाण कर गये।

अद्भुत ऋत ज्ञान के पोषक गुरु विरजानन्द सरस्वती जी

संसार में वैचारिक क्रान्ति द्वारा परिवर्तन करने वाले महापुरुषों के जीवन में विशेष परिस्थियों में भी वह अपने विपरीत चुनौतियों के चैलेंजों से जूझते हुए प्राणों की बाजी लगा देते हैं। किन्तु वे संघर्ष में पीठ नहीं दिखाते हैं अपितु जमाने को बदल देते हैं। जमाने की गर्दन पकड़ कर अपने पीछे चला देते हैं।

इतिहास गवाह है महाभारत काल के बाद सर्व प्रथम भारत की पवित्र भूमि में प्राचीन आर्ष ऋषियों की वेदानुकूल परम्परा द्वारा ऋत सत्य के मार्ग पर चलाने वाले गुरु विरजानन्द जी का जन्म संवत् 1854 में ब्राह्मण परिवार में ग्राम गंगापुर पंजाब में हुआ था इनके पिता नारायण दत्त सारस्वत ब्राह्मण थे। पांच वर्ष की आयु में नेत्र रोग के कारण इनके नेत्रों की ज्योति चली गयी थी। 11 वर्ष की आयु में माता-पिता दिवंगत हो गये थे और इनकी विलक्षण प्रतिभा होने के कारण सारस्वतादि संस्कृत का गम्भीर ज्ञान इनको हो गया था। इन के सिर से मातृत्व व पितृत्व का साया उठने क कारण इनको अपने ज्येष्ठ भ्राता व भाभी की शरण में जाना पड़ा। किन्तु भाई व भाभी का क्रूर व शोषण के स्वभाव के कारण उनका संसार से चित्त उपराम हो गया और इन्होंने घर छोड़ दिया।

उत्तराखण्ड के तीर्थ ऋषिकेश के वनों में तप करने वाले तथा 18 वर्ष की अवस्था में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने सन्यास ग्रहण किया तभी से इनका नाम स्वामी विरजानन्द सरस्वती पड़ा गया। सन्यास लेने के पश्चात् भारत का भ्रमण करते हुए मथुरा को इन्होंने अपना शिक्षा का केन्द्र बना लिया था।

इनको पुराण आदि मानुषी ग्रन्थों से बड़ी घृणा थी। इसी कारण यह कोमुदी और पुराण आदि अनार्ष ग्रन्थों के रचियेता को बड़ी तुच्छ दृष्टि से देखते थे और अपने शिष्यों को भिक्षा देकर कहते थे इन मनुष्य कृत ग्रन्थों ने मानव समाज में अन्ध ाविश्वास व भ्रम जाल फैला दिया है और ईश्वरीय ज्ञान से वेदों से ऋषियों के ऋत ज्ञान के अभाव से संसार को पीछे ढ़केल दिया है।

वह वेदों को स्वत: प्रमाण मानते थे और अपने शिष्यों को ऋषि कृत ग्रन्थ ही पढ़ाते थे। वे व्याकरण के सूर्य कहलाते थे, अष्टाध्यायी महाभाष्य, व्याकरण के मुख्य ग्रन्थ मानते थे, तथा कौमुदी मनोरमादि मनुष्यकृत न्याय मुक्तावली भागवतादि पुराण व रघु वशांदि काव्य, वेदान्त के पंचदशी इत्यादि नवीन सम्प्रदाय-जितने ग्रन्थ थे उनको अशुद्ध व अनार्ष मानते थे।

अद्भुत स्वामी दयानन्द सरस्वती गुरु विरजानन्द जी के चरणों में

अब हम दूसरे महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जिन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा संक्षिप्त प्रकाश डालते हैं। यद्यपि आर्य जगत महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र से अवगत है यहां पर हम उनके वैचारिक कान्ति पर विचार करते हैं।

अट्ठारहवीं व उन्नीसवीं शताब्दि में भारत में अनेक विभूतियों ने जन्म लिया। उनमें ऋषि दयानन्द ने सबको पीछे छोड़ दिया क्योंकि अनेक सम कालीन विभूतियों ने एक-एक विधा पर कार्य किया, किन्तु देव दयानन्द जी ने समाज की तमाम, धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक बुराईयों को जड़ से उखाड़ने का कार्य किया। दयानन्द समय का दास बनकर नहीं आये थे, किन्तु समय को अपना दास बनाने आये थे। साधारण लोग ललकार सुन कर जीवन संग्राम से भाग खड़े होते हैं और जमाने का रंग पकड़ लेते हैं।

ऋषि दयानन्द जब इस डूबते भारत देश के रणांगन में उतरे तब उन्हें चारों ओर ललकार ही ललकार सुनाई दी। सबसे बड़ा चैलेंज था विदेशी राज्य की। उन्होंने कहा मैं विदेशी राज्य को बरदाश्त नहीं करुंगा। देश की परतन्त्रता ही ऋषि दयानन्द के सम्मुख सबसे बड़ा चैलेंज था।

तीन वर्ष का चमत्कार

14 नवम्बर 1860 के दिन स्वामी दयानन्द जी ने गुरुविरजानन्द का द्वार खटकाया, अन्दर से आवाज आई कौन, इन्होंने उत्तर दिया यही तो पूछने आया हूं, मैं कौन हूं। अन्दर से आवाज आई अन्दर आ जाओ और जो अनार्ष ग्रन्थ बगल में दबाये हो, उन्हें यमुना में फेंक आओ। अद्भुत गुरु अद्भुत शिष्य। स्वामी जी ने गुरु विरजानन्द जी से केवल 3 वर्ष व्याकरण पढ़ा था और पिछला सब कुछ भुला दिया था। रण क्षेत्र में रहकर उन्होंने जो भी कार्य किये, वह सब इन वर्षों का चमत्कार था। तीन वर्षों में जो पाया वह बहुत ही मूल्य वान था। उन्होंने अपने गुरु से जो भेद पाया था, वह था आर्ष और अनार्ष का भेद करना इसी आर्ष क्रान्ति का मूल स्रोत्र सत्यार्थ प्रकाश वैचारिक आर्ष क्रान्ति का ग्रन्थ लिखा और उसमें 377 ग्रन्थों का उद्धरण, 1542 वेद मंत्रों का उद्धरण लिखा। ऐसे विचार उस युग में कोई सोच भी नहीं सकता था और 1874 में स्वराज्य सर्वोत्तम है इसे लिखने का साहस केवल महर्षि दयानन्द जी ही कर सके थे। उन्होंने पुन: हमें वेदों की ओर लौटाया। तीन वर्षों के अध्ययन ने संसार के रूढ़ि विचार धाराओं को परिवर्तन कर दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा मुख्य कार्य

सबसे प्रथम कार्य उन्होंने जो किया कि मैं विदेशी राज्य को वरदाश्त नही करूंगा ओर तीन वर्ष उनके अज्ञात जीवन में उन्होंने जगह-जगह घूम कर स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रचार होगा। यही कारण है कि उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी ओर अस्सी प्रतिशत आर्यों ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपना बलिदान दिया था।

रूढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सदियों सेपरम्परागत रूढ़िवाद पर कठोर प्रहार किया। उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में रूढ़िवाद को तिलांजलि देने का नारा लगाया। ऋषि दयानन्द के समय में भारतके हर क्षेत्र में हलचल मच गयी।

- शेष पृष्ठ 8 पर

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959

Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : ..... समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/..... मासिक आय.....

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

: पारिवारिक :

6. पिता/संरक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:.....
   दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक).....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से होतो सही पर (✓) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें: .....

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, जनकपुरी, ए-ब्लॉक, नई दिल्ली

दिनांक :- 3 जुलाई 2016 समय :- प्रात: 10 बजे से

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

श्री अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428

श्री एस.पी. सिंह, संयोजक दिल्ली प्रदेश मो. 09540040324

श्री विकास नरुला, प्रधान, आर्यसमाज जनकपुरी, ए-ब्लॉक, नई दिल्ली मो. 09990333798

श्री विरेन्द्र सरदाना, मंत्री, आर्यसमाज जनकपुरी, ए-ब्लॉक, नई दिल्ली मो. 09911140756

नोट : 1. ई-मेल एडरेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है

2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नही होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। **फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।**
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिज बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

Glimpses of the Atharva Veda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Divine Armour

"May heaven and earth be my armour, my armour be the day; armour be the sun. May all bounties of Nature make my armour. May any calamity never reach me."

"What armour those bounties of Nature, shining in the sky, assuming bodily form, put on their bodies, what the resplendent self makes an armour for himself-may that protect us from all sides."

"whatever He, who is the Lord of the Univers and the Lord of creatures breathing in the midspace, has made an armour for His creatures, and what the quarters and the midquarters put on-may all those be my ample defence."

वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः।

वर्म मे विश्वे देवाः कृन्मा मा प्रापत् प्रतीचिका।। (Av.xix.20.4)

varma me dyavaprthivi varmaharbarma suryah.

varma me visvedevah kranma ma prapat praticika..

यत्ते तनूष्वनह्वन्त देवा द्युराजयो देहिनः।

इन्द्रो यच्चक्रे वर्म तदस्मान्पातु विश्वतः।। (Av.xix.20.3)

yatte tanusvanahyanta deva dyurajayo dehinah.

Indro yaccakre varma tadsmanpatu visvatah..

यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः।

प्रदिशो यानि वसते दिशश्च तानि मे वर्माणि बहुलानि सन्तु।। (Av.xix.20.2)

Yani cakar bhubanasya yaspatih prajapatirmatarisva prajabhyah.

pradiso yani vasate disasca tani me varmani bahulani santu..

The Animals also recognise medicinal herbs

"The boar knows the plant; the mongoose knows medicinal herb; the herb which the serpents and the sustainer of the earth know-those we call upon to save this man."

"The herb with sapful limbs that eagles know, the divine herbs that sparrows know, the herbs that are known to the birds and the swans, and to all the winged ones; and the medicinal plants that are known to the deer-these I call to save the man."

Some animals possess inherited knowledge for the treatment of various diseases. They approach the trees and plants to get rid of sufferings. The animals living on grass type products, never eat flesh for sustenance of their lives.

वराहो वेद वीरुधं नकुलो वेद भेषजीम्।

सर्पा गंधर्वा या विदुस्ता अस्मा अवसे हुवे।।(Av.viii.7.23)

Varaho veda birudham nakulo veda bhesajim.

sarpa gandharva ya vidusta asama avase huve..

याः सुपर्णा आङ्गिरसीर्दिव्या या रघटो विदुः।

Yah suparna angirasirdvya ya raghato viduh.

वयांसि हंसा या विदुर्याश्च सर्वे पतत्त्रिणः। मृणा या विदुरोषधीस्ता अस्मा बवसे हुवे।। (Av.viii.7.24)

Vayansi hansa ya viduryasca sarve patatrinah.

mrga ya vidurosadhista asma avase huve..

Security and Fearlessness

"May the midspace grant us security and fearlessness; may security be from both these heaven and earth; may security be ours from the back, from the front, from the height and from below - may we be without fear from all these quarters."

"Security and safety be ours from friends and from the unfriendly ones; saftey from whom we know and from whom we know not, saftey be ours by night, and also in day time. Friendly to me be all the quarters and regions."

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधराद भयं नो अस्तु।। अभयं मित्रादभयममित्राद भयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।। (Av.xix.15.6)

Abhayam nah karaty antariksam abhayam dyavaprthivi ubhe ime.

abhayam pascadabhayam purastaduttaradadharadabhayam no astu.. Abhyam mitrad abhayamamitrad abhayam jnatadabhyam paroksat.

abhayam naktamabhayam diva nah sarva asa mama mitram bhabantu..

To be Continued.....

आओ संस्कृत सीखें

देवनागरी लिपि के स्वर और व्यंजन; ध्वनियों का वर्गीकरण, शुद्ध उच्चारण का महत्त्व

गतांक से आगे....

1.4 विसर्ग (:) संस्कृत में विसर्ग (:) का उच्चारण हलके ह् जैसा होता है।

संस्कृत शब्द के अन्त में विसर्ग का प्रयोग काफी अधिक होता है। आइए, अब हम निम्नलिखित शब्दों को पढ़ें :-

अतः- इसलिए, **अपि**- भी, **पाठः, पटः**- कपड़ा, **एकः**- एक (पुल्लिंग), **कः**- कौन ? **बालकः**- बालक, **एकः बालकः** एक बालक।

1.5 अघोष महाप्राण व्यञ्जन- दूसरे कालम के व्यंजनों **(ख छ ठ थ फ)** का उच्चारण उन्हीं स्थानों से होता है जिनसे पहले कालम के व्यंजनों **(क च ट त प)** का, पर इनके उच्चारण में फेफड़ की हवा विशेष बल के साथ बाहर निकलती है। यदि आप अपने मुँह के सामने उ ल्टा हाथ रखकर ख छ ठ थ फ का उच्चारण करें तो आप हवा के इस झोके को अनुभव कर सकते हैं। इसी कारण इन व्यंजन को महाप्राण कहा जाता है। निम्नलिखित शब्दों को पढिए:

पाठः, नखः छटा, फेनः, कथा, अतिथिः नभः- (आकाश), अपि-भी

1.6 घोष व्यञ्जन- सारणी के तीसरे कालम के व्यंजनों **(ग ज ड द ब)** का उच्चारण उन्हीं स्थान से होता है जिनसे पहले कालम के व्यंजनों का। इनके उच्चारण में गले के अन्दर की स्वर तन्त्रियों में कम्पन होता है जिससे इन व्यंजनों के उच्चारण में एक विशेष गूँज सी उत्पन्न होती है क-ग, प-ब, आदि अक्षरों के जोड़ों का उच्चारण कर आप इस गूँज को अनुभव कर सकते हैं। इस गूँज के कारण ग ज ड द ब को घोष कहा जाता है। निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए:

गतिः, पादः, देहः, गौः, दुःखी, दाता, जगत्, बलम्, दुःखम्।

1.7 घोष महाप्राण व्यञ्जन- चौथे कालम के व्यञ्जनों (घ झ ढ ध भ) का उच्चारण तीसरे कालम में व्यंजनों के समान होता है पर इनके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कम्पन के साथ हवा विशेष बल के साथ बाहर निकलती है। ये व्यंञ्जन महाप्राण और घोष दोनों हैं। निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए:

भगिनी- बहिन, नाभिः, घटः- घड़ा, अधुना-अब, दधि-दही।

1.8 नासिक्य व्यञ्जन- सारणी के अन्तिम कालम के पाँच व्यञ्जनों **(ङ ञ ण न म)**का उच्चारण उन्हीं स्थानों से होता है जहाँ से उस वर्ग के अन्य व्यञ्जन का, किन्तु उनके उच्चारण में हवा मुख के साथ नाक से भी निकलती है। इनको नासिक्य व्यञ्जन कहते हैं। निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए:

माता, जनः, नमः, कणः, मानः, तमः, मम, नाम, न।

टिप्पणी- नासिक्य व्यञ्जनों (ङ ञ ण न म) को पंचमाक्षर भी कहते हैं क्योंकि ये अपने-अपने वर्ग के पाँचवे अक्षर हैं।

1.9 अनुस्वार और अनुनासिक- अनुस्वार का उच्चारण अर्धस्वर, ऊष्म और ह् से पूर्व नासिक्य ध्वनि को बताने के लिए होता है, जैसे:- संयम, संशय, संहार आदि।

अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) में अन्तर है। अनुस्वार एक अलग व्यञ्जन वर्ण है, परन्तु अनुनासिक को अलग ध्वनि नहीं है। जब किसी स्वर के उच्चारण में हवा नासिका में से भी निकले तो वह स्वर अनुनासिक हो जाता है, जैसे:-

देवाँस्तरति, कस्मिँश्चित्।

1.10 अर्धस्वर और ऊष्म व्यंजन - य र ल व को अर्धस्वर कहते हैं क्यों कि इनका उच्चारण स्वर और व्यंजनों के बीच का है। आगे चलकर हम देखेंगे कि इन चार अर्धस्वरों का क्रमशः इ ऋ लृ और उ स्वरों के साथ विशेष संबंध है। श ष स ह का सामूहिक नाम ऊष्म है। ऊष्म ध्वनिय के उच्चारण में हवा मुख में जीभ से रगड़ खाकर बाहर निकलती है। इनमें से ष का उच्चारण लगभग लुप्त हो चुका है और अब इसका उच्चारण श के समान ही होने लगा है। पर संस्कृत शब्द को लिखते हुए श और ष का अन्तर करना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए शेष शब्द में दोनों व्यंजनों का उच्चारण एक जैसा होते हुए भी उन्हें अलग-अलग रूप में लिखना आवश्यक है। निम्नलिखित शब्दों को ध्यान पूर्वक पढ़िए:

सुखी, आशा, आयः, देवः, तव- तुम्हारा, सः- वह (पु.) सा- वह (स्त्री.), एष- यह (पुंलिंग), एषा- यह (स्त्रीलिंग), वेशः शेष, बाकी, सखा, एव।

1.11 वैसे तो सभी भाषाओं में शद्धु उच्चारण करना आव श्यक है पर संस्कृत में शुद्ध उच्चारण का विशेष महत्तव है। संस्कृत की एक सुदीर्घ और गंभीर मौखक पर पराम्परा है। संस्कृत की आत्मा में प्रवेश करने के लिए शब्द का मुखर उच्चारण बहुत महत्तवपूर्ण है। संस्कृत के मंत्रों का पाठ, श्लोक का वाचन, स्तात्रों का गायन आज भी प्रचलित है। संस्कृत की ध्वनियों का अपना एक विशेष स्पन्दन है जो हमारी चेतना को प्रभावित करता है। इसिलए संस्कृत के वाक्य को मौन पढ़कर उनका अर्थ समझ लेना काफी नहीं है। उन्हें बार-बार ऊँची आवाज में बोलिए ताकि आप संस्कृत शब्द के स्पन्दन को आत्मसात् कर सकें। इसी प्रकार पाठों में आए श्लोकों को याद कर लीजिए और उनका बार.बार गायन कीजिए। इस प्रकार आप न केवल संस्कृत के शब्द और उनके अर्थ को समझ सकेंगे अपितु संस्कृत की आत्मा में भी सहज रूप से प्रवेश कर सकेंगे। - ***क्रमशः***

-आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

दिनांक 5 जून 2016 से 19 जून 2016

स्थान : एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, आर्य समाज पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली-26

उद्घाटन समारोह
6 जून, सायं 6:30 बजे

समापन एवं दीक्षान्त समारोह
19 जून, प्रात: 10 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिविर में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी के शारीरिक एवं बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। शिविर में दशम कक्षा उत्तीर्ण आर्य वीर ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

प्रवेश शुल्क: शाखानायक 300/-, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक 500/- शिविरार्थी को पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आवश्यक सामान : गणवेश-खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान।

नोट : शिविरार्थी स्थानीय आर्य समाज या आर्य वीर दल के अधिकारी का संस्तुति पत्र अथवा आर्य वीर दल के प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र और अपने दो चित्र साथ लाएं। शिविर में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा जो आर्य वीर दल की शाखा में जाते हैं अथवा जिन्होंने आर्य वीर प्रथम श्रेणी का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य	जगबीर आर्य	सत्यवीर आर्य	स्वामी देवव्रत	सत्यानन्द आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान	संचालक	महामन्त्री	प्र. संचालक	प्रधान	प्रबन्धक
दि.आ.प्र.सभा	आ.वी.द. दिल्ली	सार्वदेशिक आर्य वीर दल		एस. एम. आर्य प.स्कूल	

आर्य वीर दल दिल्ली का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 27 मई से 5 जून 2016

स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, रोहिणी, सैक्टर- 7, दिल्ली-110085

उद्घाटन समारोह
29 मई, सायं 5:00 बजे

समापन एवं दीक्षान्त समारोह
5 जून, सायं 4 बजे

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का प्रांतीय प्रशिक्षण शिविर डी.ए.वी. प. स्कूल, सैक्टर 7, रोहिणी, दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। उद्घाटन 29 मई को सायं 5 बजे एवं समापन 5 जून को सायं 4:30 बजे आयोजित किया जाएगा। शिविर में 14 वर्ष से अधिक आयु के आर्य वीर ही भाग ले सकेंगे। जानकारी के लिए संपर्क करें :-

जगबीर आर्य — **संचालक (मो. 9810264634)**
बृहस्पति आर्य — **महामंत्री (मो.9990232164)**

गढ़वाल में जनजागरण आर्य महासम्मेलन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढ़वाल के तत्वावधान में 10 से 12 जून 2016 के मध्य देव एवं ज्ञान यज्ञ का भव्य सत्संग समारोह जनजागरण आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य अतिथि नगर पालिका नई टिहरी के श्री उमेश चरण गुसांई जी होंगे एवं वरिष्ठ आमन्त्रित अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह जी, नई दिल्ली, एवं आचार्य श्री बालकृष्ण जी पतंजलि योग पीठ हरिद्वार होंगे। ***-मुख्य संयोजक, मो. 09411512019***

आर्यसमाज नांगलराया का वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज, नांगल राया नई दिल्ली 3 जून से 5 जून 2016 तक वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री श्याम शर्मा जी होंगे एवं अति विशिष्ट अतिथि पूर्व महापौर श्री पृथ्वीराज साहनी जी होंगे। ***-मंत्री***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मू में दिनांक 5 जून से 12 जून 2016

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर इस बार जम्मू शहर में 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की वे वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम-से-कम दो शिविरों में भाग लिया हो, आ सकती हैं। इच्छुक वीरागनाएं अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दे दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
96722-86863	98107-02760	99102-34595	98102-74318

संस्कृत सम्भाषण शिविर : 5 से 14 जून, 2016

राजधानी पब्लिक स्कूल विकास नगर हस्तसाल उत्तम नगर नई दिल्ली 59

संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली द्वारा दिल्ली संस्कृत अकादमी के सहयोग से नि:शुल्क संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का समय प्रात: 8:30 से 10:00 बजे रहेगा। इच्छुक संस्कृत सीखने के लिए भाग ले सकते हैं।

डॉ. ब्रजेश गौतम, डॉ. विश्वम्भर दयालु 9968812963, 9868879710,

यज्ञ वैज्ञानिकों की दृष्टि में

⋆ विभिन्न रोगों के जन्तुओं (बैक्टीरिया) को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल तथा सुलभ पद्धति अन्य कोई नहीं है। ***-एम. मॉनियर, चिकित्सा शास्त्री***

⋆ केसर तथा चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। ***-डॉ. कर्नल किंग***

⋆ एक प्रयोग के मुताबिक लगभग 8हजार घन फीट के एक हॉल में प्रतिदिन एक समय हवन करने से कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदूषण का 77.5 प्रतिशत भाग नष्ट हो गया सिर्फ इतना ही नहीं इस प्रयोग से 96 प्रतिशत हानिकारक कीटाणु भी नष्ट हो गये। ***-फर्ग्युसन कॉलेज पुणे के जीवाणु शास्त्रियों का प्रयोग***

⋆ मुनक्का, किशमिश, मखाने आदि से हवन करने से सन्निपात ज्वर, मोतीझरा(टाईफाईड) के कीटाणु मात्र एक घण्टे में नष्ट हो जाते हैं। **-डॉ. डीलिट**

स्वर्ग कामो यजेत (शत.ब्रा.) अर्थात् : स्वर्ग सुख, शान्ति, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल, सन्तान, धन, सम्पत्ति, यश व कीर्ति की इच्छा रखने वाला यज्ञ करे।

जी हां, यज्ञ की इन्हीं सब विशेषताओं और महालाभों को देखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना को क्रियान्वित किया हुआ है। आप भी अपने घर-परिवार, गली-मोहल्ला, पार्क-कॉलोनी में यज्ञ कराएं और यज्ञ करवाने के लिए लोगों को प्रेरित करें। दिल्ली व दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें- ***श्री सत्य प्रकाश 'साधक' मो. 09650183335***

प्रथम पृष्ठ का शेष

जहाँ तक कुछ मौलवियों की बात है तो उनके अजीबों-गरीब फरमानों से इतिहास भरा पड़ा है। कुछ रोज पहले के समाचार देखे तो तमिलनाडु और बरेली के एक मुस्लिम संगठन ने योग गुरु रामदेव के पतंजलि उत्पादों के खिलाफ फतवा जारी किया था, इस पर यदि प्रश्न करे तो क्या आज तक किसी हिन्दू धर्म गुरु ने हमदर्द के रूहअफ्जा पर आज तक कोई आदेश दिया है कि यह मुस्लिम की कम्पनी है, इसके उत्पाद का इस्तेमाल मत करो? यदि योग और स्वास्थ्य की बात की जाये तो 2012 में पाकिस्तान की एक मस्जिद ने फरमान जारी हुआ था कि बॉडी स्केन कराना इस्लाम में हराम है इस पर पाकिस्तान के लेखक-विचारक हसन निसार ने अपनी बेबाक राय रखते हुए कहा था कि पाकिस्तान और हिंदुस्तान का इस्लाम दुनिया से अलग है। यह लोग खजूर खाना आज भी सुन्नत मानते हैं जबकि यह नहीं जानते कि अरब में सेब और पपीता नहीं होता था जिस वजह से वे लोग खजूर खाते थे। निसार आगे कहते हैं कि जब दीन और सियासत अनपढ़ लोगों के हाथों में हो तो फतवों के अलावा उस देश में कुछ नहीं हो सकता। जिसे अच्छा स्वास्थ्य अच्छी जीवन शैली चाहिए वह विज्ञान पढ़ ले जिसे दीन के सिवा कुछ न चाहिए वो कुरान पढ़ ले। किन्तु तस्वीरों को मजहब में हराम मानने वाले लोग टीवी पर बैठकर सीधे-सादे लोगों को अपने फरमान भी न सुनाएं। ***-राजीव चौधरी***

वधु चाहिए

30 वर्षीय आर्य युवक लम्बाई 5' 10'' डबल एम.ए., पी.एच-डी. मुम्बई में योग अध्यापक वार्षिक आय 8 लाख, 26 वर्षीय आर्य युवक लम्बाई 5' 8'', डबल एम.ए.,एम. एड., मुम्बई में योग अध्यापक वार्षिक आय 8 लाख। दोनों युवकों हेतु लिए आर्य विचारधारा वाली पारिवारिक कन्याएं चाहिए। सम्पर्क करें -

- श्री राम मूर्ति आर्य,
रेलवे क्रासिंग मालीपुर, अम्बेडकर नगर
मो. 9415535059, 7666666991

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 मई से रविवार 29 मई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26/27 मई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 मई, 2016

पृष्ठ 5 का शेष

धार्मिक क्षेत्र में रूढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि ने सबसे पहला प्रहार वेदों के रूढ़ी अर्थों पर किया और निरुक्त शास्त्र के आधार पर उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में इतिहास नहींहै, अर्थात् प्रत्येक मंत्रों के योगिक ईश्र परक अर्थ है। उन्होंने सायणाचार्य, मेवसमूलर महीधर जेकोबी विद्वानों के अर्थो को उलट दिया। इसी एक कार्य ने मूर्ति पूजा व अन्य धार्मिक आडम्बरों को बदल दिया।

सामाजिक क्षेत्र में रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि दयानन्द धार्मिक व सामाजिक नेता होते हुए भी इस विचार पर प्रहार किया। सत्यार्थ प्रकाश के 8वें सम्मुल्लास में लिखा- अभाग्योदय से और आर्योके आलस्य प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यव्रत में भी आर्यो का अखण्ड, स्वतन्त्र स्वाधीन निमर्य राज्य इस समय नहीं है कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। उक्त विचार गुरु विरजानन्द जी व महर्षि दयानन्द जी की बहुत बड़ी क्रान्ति थी।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज वैचारिक क्रान्ति का सूर्य है

आर्य समाज संगठन ने अपने जन्म काल से संसार में प्रत्येक क्षेत्र में सुधार वादी वैचारिक क्रान्ति की कभी न बुझने वाली ज्योति जगा रखी है। भारत के इतिहासमें अब तक किसी भी अन्य संगठंन ने इतना बड़ा कार्य नहीं किया और न ही कर सकेगा। आज भी प्राचीन भारत की संस्कृति संस्कार यदि जिन्दा हैं तो आर्य समाज के कारण हैं। आर्य समाज से जुड़े सन्यासी बानप्रस्थी उपदेशक कार्यकर्ता व सदस्यगण बहुत-बहुत धन्यवाद के पात्र है। सम्पूर्ण विश्व में जुड़े आर्य समाज के अनुयायी अपने लिये मोक्ष का मार्ग बना रहे हैं।-***पं.उम्मेद सिंह विशारद, देहरादून***

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों से निवेदन है पर्यावरण दिवस के अवसर पर अपने क्षेत्र में अधिकाधिक स्थानों पर सार्वजनिक रूप से **पर्यावरण शुद्धि यज्ञ** का आयोजन करें। कृपया आपके क्षेत्र में आयोजित किए जाने वाले यज्ञ स्थानों एवं उनके संयोजकों की सूची मोबा.नं. सहित सभा उप प्रधान **श्री ओम प्रकाश आर्य जी (9540077858)** पर लिखवा दें अथवा पत्र द्वारा भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें, ताकि आपको बैनर एवं बांटने हेतु पत्रक भिजवाएं जा सके। - ***महामन्त्री***

स्वास्थ्य चर्चा

गर्मी के मौसम में बच्चों की देखभाल

गर्मी के मौसम में ठंडा-गर्म होते ही खांसी जुखाम कोई भी व्यक्ति इसका तुरन्त शिकार हो जाता है, आइए! देखते हैं किसी भी प्रकार की खांसी को दूर करने का आसान और घरेलू उपाय-

1. आंवला, मुल्हेटी पिसी 10-10 ग्राम, मीठा सोडा 5 ग्राम को कूट-छानकर दो रत्ती दवा मलाई में रखकर प्रात: सायं गर्म पानी से लें। सूखी खांसी में राम बाण है।

2. आंवला, छोटी पीपल, सेंधा नमक 10-10 ग्राम कूट-छान कर आधा ग्राम शहद में मिलाकर दिन में तीन बार प्रयोग करें। ये गले की खराबी से उठने वाली खांसी में लाभदायक है।

3. बासारिष्ट 4-4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय दें।

4. आंवला, मुल्हेटी 25-25 ग्राम कूट पीस कर 5-5 ग्राम प्रात: सायं गर्म पानी से लें। इससे जमा कफ निकल जाता है।

5. कांडा सिंगी 25 ग्राम कूट पीसकर अदरक के रस में मिलाकर काली मिर्च जैसी गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। एक-एक गोली दिन में तीन बार चूसें। कफ वाली खांसी में आराम आएगा।

6. एक बड़े अमरूद को कुरेदकर थोड़ा सा अंदर से गूदा निकालें फिर इस अमरूद में पिसी अजवायन, काला नमक पिसा 6-6 ग्राम भर दें। कपड़ा लपेट मिट्टी चढ़ाकर तेज गर्म उपले की राख में भूने। भुन जाने पर मिट्टी कपड़ा हटाकर अमरूद पीस छान लें। आधा-आधा ग्राम शहद में मिलाकर प्रात: सायं चाटें। इससे काली खांसी ठीक हो जाती है।

7. फिटकरी 10 ग्राम को दरदरा कूट तवे पर भूने, भूनते समय केले के पेड़ के गूदे का पानी 100 ग्राम थोड़ा-थोड़ा कर डालते जाएं। फिर उतारकर ठंडाकर पीस लें। एक वर्ष के बच्चे को एक चौथाई रत्ती दो साल वाले को आधा रत्ती तीन साल वाले को एक रत्ती शहद में मिलाकर प्रात: सायं चटाएं।

8. 3-4 हल्दी की गांठों को तोड़कर तवे पर भूनकर पीस लें। फिर तीन-तीन ग्राम प्रात: सायं पानी से लें।

9. काली मिर्च 5 ग्राम पीपली 10 ग्राम अनार दाना 20 ग्राम को पीसकर गुड मिलाकर चने बराबर गोलियां बना कर छाया में सुखा कर एक-एक गोली दिन में दो तीन बार चूसें। सूखी व काली खांसी में लाभ होगा।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह